Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG. SEMESTER - V
MJC - 09: Social and Cultural Philosophy



JANUARY' 19
03
Wk-01 Day 003-362
THURSDAY

"Social Philosophy - Its nature and relation to Sociology"

(समाज दर्शन — इसकी प्रकृति और समाजशास्त्र के साथ सम्बन्ध)

दार्शनिक सिद्धान्तों का सामाजिक समस्याओं पर आरोपण करना ही समाज दर्शन है। मानव-समाज में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि अनेक समस्याएँ रहती हैं। दार्शनिक सिद्धान्तों के द्वारा समाज-दर्शन इन समस्याओं का समाधान करता है। समाज-दर्शन सामाजिक जीवन का तात्विक अध्ययन है। यह मनुष्य के सामने एक सन्तोषजनक जीवन की रूपरेखा रखता है और यह भी संकेत करता है कि वह जीवन किस तरह से प्राप्त किया जाएगा।

सभी समाजशास्त्रों के निष्कर्षों का समन्वय, सामाजिक आदर्शों तथा मूल्यों की विवेचना, समाजशास्त्रों की मान्यताओं का विचार मानव समाज की सर्वांगीण दृष्टि से विचारना और मानव समाज के विभिन्न पहलुओं को एकता में पिरोना ये समाज दर्शन के लक्ष्य हैं।

समाज दर्शन मूल्य, लक्ष्य और आदर्शों का समीक्षात्मक अध्ययन करता है जिसप्रकार दर्शन, विज्ञानों के मूलभूत आधारों का अध्ययन करता है वैसे ही समाज-दर्शन में विभिन्न समाज-विज्ञानों के मूलभूत आधारों का विचार-विनिमय होता है। इसलिए जो सम्बन्ध दर्शन का विज्ञानों से है वही सम्बन्ध समाज-दर्शन का समाज-शास्त्र की विभिन्न शाखाओं से।

समाज-दर्शन भी सामान्य दर्शन की तरह समाज-विज्ञानों द्वारा प्राप्त वैज्ञानिक ज्ञानों को एक सूत्र में बांधने की चेष्टा करता है, उनमें एकता लाने का प्रयास करता है। समाज-दर्शन विभिन्न समाज-विज्ञानों द्वारा प्राप्त तथ्यों एवं सत्यों के परस्पर विरोध को दूर कर उनमें सामंजस्य स्थापित करता है। यह सामाजिक घटनाओं की समष्टि की दृष्टि से व्याख्या एवं मूल्यांकन आचारशास्त्र एवं गहनतम

मूल्यों के आधार पर करता है। यह समाज की आदर्श एकता की कल्पना करता है। और इसी सामाजिक एकता के अनुसार मानव जीवन के विशेष रूपों की सार्थकता की व्याख्या करता है।

सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का चरम लक्ष्य क्या है, उनका क्या महत्व है, समाज का क्या आदर्श होना चाहिए, समाज के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है, इत्यादि के विषय में समाज-दर्शन के द्वारा ही ज्ञान सम्भव है। इसलिए समाज-दर्शन मुख्यतः (I) आदर्शों लक्ष्यों या मूल्यों का और (II) समाज विज्ञान की पूर्वमान्यताओं का अध्ययन है।

समाज-दर्शन सामाजिक या राजनीतिक सुधार का कोई रास्ता नहीं बताता पर समाज या सामाजिक-संस्थाओं की दिशा को निर्धारित करता है। सामाजिक संस्थाओं का उद्देश्य क्या होना चाहिए? समाज व्यक्तियों से बना है। अतः वैयक्तिक कर्मों के चरम लक्ष्य और सामाजिक लक्ष्यों में संघर्ष नहीं होना चाहिए। समाज के द्वारा ही मनुष्य नैतिक लक्ष्यों की सिद्धि करता है। इसलिए कौन-सी संस्था सहायक है और कौन-सी नहीं, यह भी समाज दर्शन की समस्या है।

समाज परिवर्तनशील है। समाज-दर्शन सामाजिक परिवर्तनों के कारणों की विवेचना करता है। इन परिवर्तनों के कारण समाज में उन्नति होती है। पर सामाजिक उन्नति के चिह्न क्या हैं? सामाजिक उन्नति का अर्थ क्या है? इसे निर्धारित करना भी समाज-दर्शन की एक समस्या है।

सामाजिक नैतिकता की समस्याएँ समाज-दर्शन के क्षेत्र के अन्तर्गत हैं। सामाजिक अपराध, उसके लिए दण्ड का विधान आदि विषय भी समाज दर्शन

के क्षेत्र के अन्तर्गत हैं। समाज-दर्शन का सम्बन्ध उन सिद्धान्तों से भी है जिनके कारण सामाजिक एकता बनती है। इसी प्रसंग में इसमें सामाजिक प्रवृत्तियों, भाषा, धर्म आदि का भी विचार किया जाता है।

मानव-संगठनों के परम-मूल्यों के विवेचन से सामाजिक व्यवहार का समाज-दर्शन मार्गदर्शन करता है। समकालीन युग मानव-संस्कृति में एक क्रान्ति का युग है। पुराने मूल्यों में परिवर्तन हो रहे हैं। इसलिए मूल्यों में स्थायित्व प्रदान करने के लिए समाज-दर्शन का अध्ययन आवश्यक है।

समाज-दर्शन सामाजिक संस्थाओं का मूल्यांकन कर उनकी सार्थकता सिद्ध करता है। प्रत्येक सामाजिक-विज्ञान में अध्ययन करने की अपनी विधि होती है। समाज दर्शन उन विधियों का मूल्यांकन कर उनका स्थान अन्य विज्ञानों को दिलाता है। जबकि प्रत्येक समाज विज्ञान का सामाजिक जीवन के विशेष क्षेत्र से सम्बन्ध होता है। समाजदर्शन का सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों से। अतः समाज दर्शन का महत्व मानव-जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में है। शिक्षा के क्षेत्र में और राजनीतिक क्षेत्र में, आर्थिक क्षेत्र में समाज-दर्शन का विशेष महत्व है।

समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र (sociology and Philosophy) एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। सेलर्स के अनुसार- दर्शनशास्त्र एक व्यवस्थित विचार या चिन्तन के माध्यम से संसार और स्वयं की प्रकृति के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न है। इसप्रकार दर्शनशास्त्र संसार और मनुष्य की प्रकृति को समझने का एक प्रयत्न है और इस प्रयत्न में समाजशास्त्र काफी योग देता है। दर्शन शास्त्र में तर्क एवं कल्पना का प्रमुख रूप से सहारा लिया जाता है। तर्क एवं कल्पना के आधार पर ही

जनरीतियों, प्रथाओं, रूढ़ियों व परम्पराओं का विकास हुआ है, और इन सबका अध्ययन समाजशास्त्र करता है। दर्शन शास्त्र सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र इनका अध्ययन सामाजिक पृष्ठभूमि में करता है। समाजशास्त्र सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों को ध्यान में रख कर ही समूह या समुदाय में व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन करता है। मैकाइवर ने समाजशास्त्र में सामाजिक मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि बिना मूल्यों (Values) के समाज को नहीं समझा जा सकता। अगस्त कॉम्ट की मान्यता है कि समाजशास्त्र का दृष्टिकोण वैज्ञानिक होने के साथ-साथ कल्याणकारी भी होना चाहिए तथा इसके लिए उसे सामाजिक मूल्यों का सहारा लेना पड़ेगा, चूंकि प्रमुखतः दर्शनशास्त्र का अध्ययन-विषय है। दर्शनशास्त्र को सामाजिक परिस्थितियों की प्रकृति को समझने के लिए समाजशास्त्र से और समाजशास्त्र को सामाजिक घटनाओं की प्रकृति को जानने के लिए दर्शनशास्त्र से सहायता प्राप्त करना आवश्यक है।

दर्शन शास्त्र की एक शाखा सामाजिक दर्शनशास्त्र (Social Philosophy) समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र को जोड़ने का काम करती है। सामाजिक दर्शनशास्त्र का कार्य सामाजिक जीवन के परम मूल्यों (Ultimate Values) की व्याख्या और इन्हें इस प्रकार प्रस्तुत करना है कि वे विभिन्न व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित कर सकें। दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध

प्रमुखतः उन सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों से है जिन्हें वह सामाजिक जीवन

में ढालना चाहता है। समाजशास्त्र एवं अन्य सामाजिक आदर्श और मूल्य सामाजिक जीवन में प्रभावपूर्ण ढंग से लागू किये जा सकें अर्थात व्यक्तियों का व्यवहार इनके अनुरूप हो सके। यहीं ये दोनों विज्ञान एक दूसरे के निकट हैं। दुर्खीम ने विश्वास-पूर्वक कहा है कि अन्य सामाजिक विज्ञानों की तुलना में समाजशास्त्र दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में सर्वाधिक सहायता प्रदान कर सकता है। साथ ही आपने (दुर्खीम) यह भी बताया है कि समाजशास्त्रीय ज्ञान के विकास में दर्शनशास्त्र का प्रभाव सदैव बना रहेगा। स्पष्ट है कि समाजशास्त्र और दर्शनशास्त्र एक दूसरे के पूरक हैं, दोनों घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं।

अन्तर (Difference)

उपर्युक्त दोनों विज्ञानों के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होते हुए भी इनमें अनेक अन्तर हैं:

(1.) दर्शनशास्त्र की तुलना में समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है। दर्शनशास्त्र तुलनात्मक दृष्टि से एक पुराना विज्ञान है।

(2.) समाजशास्त्र का अध्ययन क्षेत्र विस्तृत है जबकि दर्शनशास्त्र का सीमित है।

(3.) सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं का अध्ययन करने के कारण समाजशास्त्र एक सामान्य सामाजिक विज्ञान है। सामाजिक जीवन के केवल दार्शनिक पक्ष का अध्ययन करने के कारण दर्शनशास्त्र एक विशेष सामाजिक विज्ञान है।

notes
Phone
email
website